पर उसके स्वरूप को समझा जा सकता है। बुद्धिमान व्यक्ति में इसकी क्षमता अधिक होता है जिससे वे समस्याओं Assimilation द्वारा निदान निकाल लेते हैं।

इस तरह देखते हैं कि बुद्धि एक अभिधारणा है जिसे हम देख तो नहीं पाते हैं पर मानव की बुद्धिपरक व्यवहारों द्वारा समझ अवश्य ही सकते हैं। इसी संदर्भ में विद्वानों ने इसकी तुलना कुछ धारा से की है जिसे हम देख तो नहीं पाते हैं पर विविध रूप में अपने अस्तित्व का अहसास जरूर कराती है। ठीक उसी प्रकार बुद्धि कहीं शिक्षण, कहीं अभियोजन, कहीं चिन्तन तो कहीं स्मरण के रूप में व्यक्ति की मदद करती है। अतः ऐसी-हालत में Hilgard and Atkinson की विचार सही प्रतीत होती है कि बुद्धि परीक्षण जो कुछ मापता है, वही बुद्धि है।

(signature)
31.07.2020

(विशेषताएँ)

बुद्धि के स्वरूप को अच्छी तरह समझने के लिये इसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालना आवश्यक हो जाता है; जो निम्नलिखित हैं :-

(1) सतर्कता :- बुद्धि की पहली विशेषता सतर्कता है। बुद्धिमान व्यक्ति अपने चातुर्दिक होने वाली वातावरणीय परिवर्तनों के प्रति सतर्क और अपने इर्द-गिर्द घटित होनेवाली धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक तथा प्राकृतिक घटनाओं के प्रति संवेदनशील होता है। वातावरण में परिवर्तन के साथ अपने को परिवर्तित करता है तथा समायोजित होने के लिए प्रयास करता है। इसीलिए इसे पहले Alertness test भी कहा जाता था।

(2) धारण की क्षमता :- इस संदर्भ में किये गये अध्ययनों से पता चलता है कि धारण की क्षमता बुद्धि की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। Memory Span test पर किये गये प्रयोग से पता चलता है कि बुद्धिमान व्यक्ति या छात्रों का Recall एवं Retention सामान्य छात्रों की तुलना में अधिक होता है। LAUTRI (लाउटर) का अध्ययन भी इस बात की पुष्टि करता है।

(3) विचारों का परिचालन) :- बुद्धि की यह एक प्रमुख विशेषता है। बुद्धिमान व्यक्ति विभिन्न तरह की समस्याओं से निजात पाने के लिए अपने विचारों में परिवर्तन लाते हैं जोड़-घटाव करते हैं और समाधान ढूंढ लेते हैं।

(4) आत्मआलोचना (Self criticism & appraisal) यह एक महत्वपूर्ण विशेषता है। बुद्धिमान व्यक्ति अपनी कमियों को ढूंढता है। गलतियों से सीखता है। अपने व्यवहारों में बदलाव लाकर नई परिस्थिति में समायोजित होने का प्रयास करता है।

(5) आत्मविश्वास :- बुद्धि की यह प्रमुख विशेषता है। बुद्धिमान व्यक्ति जटिल से जटिल परिस्थितियों में दृढ़ता से समाधान ढूंढ़ते हैं जमकर सामना करता है। उनका आत्मविश्वास उसे संबल प्रदान करता है।

(6) विचारों के समीकरण की क्षमता :- यह बुद्धि की विशेषता है जिसके अनुसार

केवल चिंतन की योग्यता को बुद्धि मान लेना उचित नहीं है। चिंतन बुद्धि का एक अंश हो सकता है एकमात्र योग्यता नहीं। अतः यह केवल आंशिक व्याख्या ही कर पाता है।

(4) बुद्धि: एक समग्र योग्यता:- फ्रीमैन ने बुद्धि की परिभाषाओं को एक चौथी श्रेणी में भी विभाजित किया, जो बुद्धि को समग्र योग्यता मानते हैं। इसके तहत: वेश्लर, कगन एवं हैवमैन, रेक्सनाउर हरबैंड आदि की परिभाषाओं को रखा गया है। इस वर्ग की परिभाषाएँ सर्वाधिक स्पष्ट एवं संतोषजनक हैं। इन लोगों का मानना है कि बुद्धि बिजली की धारा की तरह है जो दिखाई तो नहीं पड़ती है लेकिन कहीं प्रकाश कहीं हवा तो कहीं आग एवं पावर के रूप में अपने अस्तित्व का अहसास अवश्य कराती है।

इस वर्ग की परिभाषाओं में वेश्लर द्वारा दी गई परिभाषा सर्वाधिक लोकप्रिय एवं संतोषजनक है क्योंकि यह परिभाषा बुद्धि के स्वरूप पर प्रकाश डालने में बहुत हद तक सक्षम है। वेश्लर के ही शब्दों में,- Intelligence is the aggregate or global capacity of an individual to act purposefully, to think rationally and to deal effectively with his environment."

अर्थात "बुद्धि व्यक्ति की वह समग्र योग्यता है क्षमता है जो उसे उद्देश्यपूर्ण कार्य करने में विवेकपूर्ण चिन्तन करने में तथा प्रभावपूर्ण ढंग से आयोजन करने में मदद करती है।

इस तरह स्पष्ट हो जाता है कि बुद्धि सम्पूर्ण योग्यता है जो व्यक्ति को प्रत्येक कार्य सफलतापूर्वक निष्पादित करने में सहायता प्रदान करती है, इसीलिये इसकी तुलना विद्युत्धारा से की जाती है जो अदृश्य होते हुए भी कई रूपों दृश्य होती है और कार्य सम्पन्न होने में मदद करती है। इसके बावजूद भी यह परिभाषा सर्वमान्य नहीं है। इसलिए Hilgard & Atkinson (1976) ने कहा है "बुद्धि वह है जिसे उचित ढंग से एक मानसिक परीक्षण मापता है।"

जा सकता है। वस्तुतः अभियोजन की योग्यता एवं बुद्धि को एक मानना उचित नहीं लगता है। इसीलिए इस वर्ग की परिभाषाओं की आलोचनाएँ की जाती हैं क्योंकि बुद्धि बुद्धि मुख्यरूप से जन्मजात होता है जबकि अभियोजन योग्यता अर्जित है। अतः दोनों के बीच के सम्बन्ध को निर्धारित करना कठिन हो जाता है। दूसरी बात यह है कि बुद्धि में समायोजन की योग्यता के अलावे भी बहुत चीजें आती हैं। अतः इस वर्ग की परिभाषाएँ एक-पक्षीय लगती हैं।

(2) बुद्धि: सीखने की योग्यता :- फ्रीमैन ने इस वर्ग के अन्तर्गत वैसी परिभाषाओं को रखा है जो बुद्धि को सीखने की योग्यता मानते हैं। इस विचारधारा के समर्थक मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि जो व्यक्ति जल्द सीखते हैं और जटिल विषयों को सीख लेते हैं वे लोग बुद्धिमान होते हैं और जो लोग देर से सीखते हैं तथा जटिल विषय को नहीं सीख पाते हैं वे मंद बुद्धि या कम बुद्धिवाले होते हैं। इसमें एबिंगहॉस, बकिंघम, गोडार्ड आदि की परिभाषाएँ आती हैं। Ebbinghaus (1897) के अनुसार - "सीखने तथा पूर्वअनुभूति से लाभ उठाने की योग्यता ही बुद्धि है।"

इस वर्ग की परिभाषाओं की समालोचना-त्मक अध्ययन करने पर पाते हैं कि ये दोषपूर्ण हैं। ऐसे परिभाषाएँ भी एक पक्षीय हैं क्योंकि इनमें अन्य पक्षों की अवहेलना की गई है। इस संदर्भ में Morgan & King का कहना है कि "केवल शिक्षण की योग्यता के रूप में बुद्धि को परिभाषित नहीं किया जा सकता है। सीखना एवं बुद्धि को एक मानना उचित नहीं है।

(3) बुद्धि: चिन्तन की योग्यता :- इस वर्ग की परिभाषाएँ "बुद्धि को चिन्तन की योग्यता मानता है। उनकी मान्यता है कि जिनकी बुद्धि अधिक होती है, ऐसे लोग बुद्धिमान होते हैं। बुद्धिमान व्यक्ति के पास Abstract thinking होती है। इसके अलावे कम बुद्धिवाले के पास Abstract thinking की योग्यता कम होती है। टर्मन ने अमूर्त चिन्तन की योग्यता को बुद्धि माना है, इस तरह गैरेट के अनुसार" चिन्तन की योग्यता ही बुद्धि है।

इस समूह की विचारधाराएँ भी दोषपूर्ण हैं

EDUCATIONAL PSYCHOLOGY

B.A. (Hons) Part-III
Paper-VI Group (B)

By = Dr. Ramendra Kumar Singh
Deptt of Psychology
D.K. College, Dumraon (Buxar)
VKSU Ara

NATURE & CHARACTERISTICS OF INTELLIGENCE

बुद्धि एक सामान्य पद है जिसका प्रयोग प्रायः हम अपने रोजमर्रा की जिन्दगी में करते हैं। इसकी परिभाषा एवं स्वरूप को लेकर मनोवैज्ञानिकों में गहरा मतभेद है। विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने इसे अपने-अपने ढंग से परिभाषित करने का प्रयास किया है। ऐसी स्थिति में यह प्रश्न उठता है कि आखिर बुद्धि कहते किसे हैं? इस प्रश्न का उत्तर हम मनोवैज्ञानिकों द्वारा बुद्धि की दी गई परिभाषाओं को ध्यान में रखकर ढूंढने का प्रयास करेंगे। फ्रीमैन ने बुद्धि की दी गई तमाम परिभाषाओं को चार वर्गों में रखकर अध्ययन किया है। यहाँ भी उन्हीं चार वर्गों में बाँटी गई परिभाषाओं को आधार बनाकर बुद्धि की स्वरूप एवं विशेषताओं की व्याख्या करना उचित लगता है :-

(1) बुद्धि एक अभियोजन की योग्यता :- इस दृष्टिकोण को रखने वाले मनोवैज्ञानिकों के अनुसार "अभियोजन की योग्यता ही बुद्धि है।" अर्थात बुद्धि वह योग्यता है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपनी आवश्यकता एवं बाह्य वातावरण के बीच संतुलन स्थापित करने में कामयाब हो पाता है। स्पष्ट है कि उक्त वर्ग की परिभाषाओं में अभियोजन ही बुद्धि का मापदंड है। इसके तहत वेल्स, स्टर्न, कॉल्विन आदि की परिभाषाओं को रखा जा